

## पंचलाइट

जाड़े का दिन। अमावस्या की रात ठंडी और काली। मलेरिया और हैजे से पीड़ित गांव भयार्त्त शिशु की तरह थर-थर कांप रहा था। पुरानी और उजड़ी बांस-फूस की झोंपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य ! अंधेरा और निस्तब्धता ! अंधेरी रात चुपचाप आंसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हंस पड़ते थे। सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गांव की झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज, हरे राम ! हे भगवान की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी। बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से मां-मां' पुकार कर रो पड़ते थे। पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी। कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है। वे दिन भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुड़कर, मन मारकर पड़े रहते थे। संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे। रात्रि अपनी भीषणताओं के साथ चलती रहती और उसकी सारी भीषणता को ताल ठोककर, ललकारती रहती थी-सिर्फ पहलवान की ढोलक ! संध्या से लेकर प्रातःकाल तक एक ही गति से बजती रहती चट्-धा, गिड़-धा,.... चट्-धा, गिड़-धा !' यानी 'आ जा भिड़ जा, आ जा भिड़ जा !' बीच बीच में चटाक्-चट्-धा,

चटाक्-चट-धा !' यानी उठाकर पटक दे ! उठाकर पटक दे !!' यही आवाज मृत-गांव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी। लुट्टन सिंह पहलवान ! यों तो वह कहा करता था-लुट्टन सिंह पहलवान को होल इंडिया भर के लोग जानते हैं, किंतु उसके 'होल इंडिया' की सीमा शायद एक जिले की सीमा के बराबर ही हो। जिले भर के लोग उसके नाम से अवश्य परिचित थे। लुट्टन के माता-पिता उसे नौ वर्ष की उम्र में ही अनाथ बनाकर चल बसे थे। सौभाग्यवश शादी हो चुकी थी, वरना वह भी मां-बाप का अनुसरण करता। विधवा सास ने पाल पोस कर बड़ा किया। बचपन में वह गाय चराता, धारोष्ण दूधपीता और कसरत किया करता था। गांव के लोग उसकी सास को तरह-तरह की तकलीफ दिया करते थे, लुट्टन के सिर पर कसरत की धुन लोगों से बदला लेने के लिए ही सवार हुई थी। नियमित कसरत ने किशोरावस्था में ही उसके सीने और बांहों को सुडौल तथा मांसल बना दिया था। जवानी, में कदम रखते ही वह गांव में सबसे अच्छे पहलवान समझा जाने लगा। लोग उससे डरने लगे और वह दोनों हाथों को दोनों ओर 45 डिग्री की दूरी पर फैलाकर, पहलवानों की भांति चलने लगा। वह कुश्ती भी लड़ता था। एक बार वह 'दंगल' देखने श्यामनगर मेला गया। पहलवानों की कुश्ती और दांव-पेंच देखकर उससे नहीं रहा गया। जवानी की मस्ती और ढोल ललकारती हुई आवाज ने उसकी नसों में बिजली उत्पन्न कर दी। उसने बिना कुछ सोचे-समझे दंगल में शेर के बच्चे को चुनौती दे दी। शेर के बच्चे का असल नाम था चांद सिंह। वह अपने गुरु पहलवान बादल सिंह के साथ, पंजाब से पहले-पहल श्यामनगर मेले में आया था। सुंदर

जवान, अंग-प्रत्यंग से सुंदरता टपक पड़ती थी। तीन दिनों में ही पंजाबी और पठान पहलवानों के गिरोह के अपनी जोड़ी और उम्र के सभी पट्टों को पछाड़कर उसने 'शेर के बच्चे' की टायटिल प्राप्त कर ली थी। इसलिए वह दंगल के मैदान में लंगोट लगाकर एक अजीब किलकारी भरकर छोटी दुलकी लगाया करता था। देशी नौजवान पहलवान, उससे लड़ने की कल्पना से भी घबड़ाते थे। अपनी टायटिल को सत्य प्रमाणित करने के लिए भी चांद सिंह बीच-बीच में दहाड़ता फिरता था। श्यामनगर के दंगल और शिकार प्रिय वृद्ध राजा साहब उसे दरबार में रखने की बातें कर ही रहे थे कि लुट्टन ने शेर के बच्चे को चुनौती दे दी। सम्मान-प्राप्त चांद सिंह पहले तो किंचित, उसकी स्पर्धा पर मुस्कुराया। फिर बाज की तरह उस पर टूट पड़ा। शांत दर्शकों की भीड़ में खलबली मच गयी पागल है पागल मरा ऐं, मरा-मरा !'....पर वह रे बहादुर ! लुट्टन बड़ी सफाई से आक्रमण को संभालकर निकल कर उठ खड़ा हुआ और पैतरा दिखाने लगा। राजा साहब ने कुश्ती बंद करवाकर लुट्टन को अपने पास बुलवाया और समझाया। अंत में, उसकी हिम्मत की प्रशंसा करते हुए, दस रुपए का नोट देकर कहने लगे-“जाओ, मेला देखकर घर जाओ !...” “नहीं सरकार, लड़ेंगे...हुकुम हो सरकार...!” “तुम पागल हो, ...जाओ !”

मैनेजर साहब से लेकर सिपाहियों तक ने धमकाया-“देह में गोشت नहीं, लड़ने चला है शेर के बच्चे से ! सरकार इतना समझा रहे हैं...!!” “दुहाई सरकार, पत्थर पर माथा पटककर मर जाऊंगा...मिले हुकुम !” वह हाथ जोड़कर गिड़गिडाता रहा

था। भीड़ अधीर हो रही थी। बाजे बंद हो गये थे। पंजाबी पहलवानों की जमायत क्रोध से पागल होकर लुट्टन पर गालियों की बौछार कर रही थी। दर्शकों की मंडली उत्तेजित हो रही थी। कोई-कोई लुट्टन के पक्ष से चिल्ला उठता था-“उसे लड़ने दिया जाये !” अकेला चांद सिंह मैदान में खड़ा व्यर्थ मुस्कुराने की चेष्टा कर रहा था। पहली पकड़ में ही अपने प्रतिद्वंद्वी की शक्ति का अंदाजा उसे मिल गया था। विवश होकर राजा साहब ने आज्ञा दे दी-“लड़ने दो !” बाजे बजने लगे। दर्शकों में फिर उत्तेजना फैली। कोलाहल बढ़ गया। मेले के दुकानदार दुकान बंद करके दौड़े-“चांद सिंह की जोड़ी चांद की कुश्ती हो रही है !” ‘चट्-धा, गिड़-धा, चट्-धा-गिड़ धा...’ भारी आवाज में एक ढोल-जो अब तक चुप था। बोलने लगा- ढाक्-ढिना ढाक्-ढिना, ढाक्-ढिना... ’ ’ (अर्थात् वाह पट्टे वाह पट्टे !!) लुट्टन को चांद ने कसकर दबा लिया था। -अरे गया-गया !!” दर्शकों ने तालियां बजायीं- हलुआ हो जायेगा, हलुआ ! हंसी-खेल नहीं शेर का बच्चा है... बच्चू !” ‘चट्-धा, गिड़-धा, चट्-धा-गिड़ धा...’ (मत डरना, मत डरना, मत डरना...) लुट्टन की गर्दन पर केहुनी डालकर चांद ‘चित्त’ करने की कोशिश कर रहा था। “वहीं दफना दे, बहादुर !” बादल सिंह अपने शिष्य को उत्साहित कर रहा था। लुट्टन की आंखें बाहर निकल रही थीं। उसकी छाती फटने-फटने को हो रही थी। राजमत, बहुमत चांद के पक्ष में था। सभी चांद को शाबाशी दे रहे थे। लुट्टन के पक्ष में सिर्फ ढोल की आवाज थी, जिसके ताल पर वह अपनी शक्ति और दांव-पेंच की परीक्षा ले रहा था-अपनी हिम्मत को बढ़ा रहा था। अचानक ढोल की एक पतली आवाज सुनायी पड़ी- ‘धाक-धिना, तिरकट-तिना, धाक-

धिना, तिरकट-तिना...!!” लुट्टन को स्पष्ट सुनायी पड़ा, ढोल कह रहा था-“दांव काटो, बाहर हो जा, दांव काटो बाहर हो जा !!” लोगों के आश्चर्य सीमा नहीं रही, लुट्टन दांव काटकर बाहर निकला और तुरंत लपककर उसने चांद की गर्दन पकड़ ली। “वाह रे मिट्टी के शेर !” “अच्छा ! बाहर निकल आया ? इसीलिए तो...!” जनमत बदल रहा था। मोटी और भोंड़ी आवाज वाला ढोल बज उठा-चटाक्-चट्-धा चटाक्-चट्-धा...’ (उठा पटक दे ! उठा पटक दे !!) लुट्टन ने चालाकी से दांव और जोर लगाकर चांद को जमीन पर दे मारा। ‘धिक-धिना, धिक-धिना ! (अर्थात् चित करो, चित करो !!) लुट्टन ने अंतिम जोर लगाया-चांद सिंह चारों खाने चित हो रहा। धा-गिड़-गिड़, धा-गिड़-गिड़, धा-गिड़-गिड़’ ... (वाह बहादुर ! वाह बहादुर !! वाह बहादुर !!) जनता यह स्थिर नहीं कर सकी कि किसकी जय-ध्वनि की जाये। फलतः अपनी अपनी इच्छानुसार किसी ने ‘मां दुर्गा की’ , किसी ने ‘महावीर जी की’ , कुछ ने राजा श्यामानंद की जय-ध्वनि की। अंत में सम्मिलित ‘जय’ ! से आकाश गूंज उठा। विजय लुट्टन कूदता फांदता ताल ठोंकता सबसे पहले बाजे वालों की ओर दौड़ा और ढोलों को श्रद्धापूर्वक प्रमाण किया। फिर दौड़कर उसने राजा साहब को गोद में उठा लिया। राजा साहब के कीमती कपड़े मिट्टी में सन गये। मैनेजर साहब ने आपत्ति की-“हें-हें अरे रे ।” किंतु राजा साहब ने स्वयं उसे छाती से लगाकर गद्गद होकर कहा-“जीते रहो, बहादुर ! तुमने मिट्टी की लाज रख ली !” पंजाबी पहलवानों की जमायत चांद सिंह की आंखें पोंछ रही थी। लुट्टन को राजा साहब ने पुरस्कृत ही नहीं किया, अपने दरबार में सदा के लिए रख लिया। तब से लुट्टन

राज-पहलवान हो गया और राजा साहब उसे लुट्टन सिंह कहकर पुकारने लगे। राज-पंडितों ने मुंह बिचकाया-“हुजूर ! जाति का दुसाध सिंह !” मैनेजर साहब क्षत्रिय थे। क्लीन शेड चेहरे को संकुचित करते हुए, अपनी पूरी शक्ति लगाकर नाक के बाल उखाड़ रहे थे। चुटकी से अत्याचारी बाल को रगड़ते हुए बोले-“हां सरकार, यह अन्याय है।” राजा साहब ने मुस्कुराते हुए सिर्फ इतना ही कहा-“उसने क्षत्रिय का काम किया है।”

TALENTS